Wasile Ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 453
Weekly Booklet : 453

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 22 साल पहले का बयान

वसीले की बरकतें

सफ़हात : 17

अ़मल जितना दुश्वार उतना ही वज़्नदार 05
गोश्त का टुकड़ा कबाब हो जाता 07
गुनाह से बचने का वसीला 11
दो जन्नतें अ़ता कर दी गईं 12

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

वसीले की बरकतें

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "वसीले की बरकतें" पढ़ या सुन ले उसे दुनिया व आख़िरत में नेकियों की बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमा और जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला दे कर अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना दे।

اٰمِين بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى اللّٰه عليه واٰله وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब दो दोस्त आपस में मिलते और मुसाफ़ह़ा करते हैं और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

(شعب الایمان، 6/471، حدیث:8944)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

वसीले की बरकतें

गुज़श्ता ज़माने में तीन आदमी किसी सफ़र पर रवाना हुए, दौराने सफ़र रात गुज़ारने के लिये एक ग़ार में दाख़िल हुए और सो गए। इतने में पहाड़ से एक चट्टान फिसल कर आई जिस के बाइ़स ग़ार का मुंह बन्द हो गया। अब उन्हों ने इस मुसीबत से नजात पाने के लिये येह त़ै किया कि हम में से हर एक अपने किसी नेक अ़मल का वसीला पेश कर के अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ करे, चुनान्चे उन में से एक ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह ! तू जानता है मेरे वालिदैन बूढ़े हो चुके थे और मैं उस वक़्त तक अपने बाल बच्चों को दूध नहीं पिलाता था जब तक अपने वालिदैन को उन के ह़िस्से का दूध न पिला लेता था। ऐ

परवरदिगार ! तू जानता है एक बार मैं अपने जानवर चराते चराते दूर निकल गया और जब रात को घर पहुंचा तो मां बाप सो चुके थे, मैं उन के हिस्से का दूध ले कर सिरहाने खड़ा रहा यहां तक कि जब बहुत देर बाद उन की आंख खुली तो मैं ने उन्हें दूध पेश किया और फिर अपने बाल बच्चों को पिलाया और ख़ुद भी पिया। ऐ अल्लाह ! अगर मेरा येह अ़मल तेरी रिज़ा और ख़ुशनूदी के लिये था तो उस की बरकत से चट्टान को ग़ार के मुंह से हटा दे और हमारी इस मुसीबत को दूर फ़रमा। इस दुआ़ की बरकत से चट्टान ग़ार के मुंह से कुछ सरक गई मगर निकलने का रास्ता न बना।

दूसरे शख़्स ने अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! मैं अपनी चचाज़ाद बहन से महब्बत करता था और वोह मुझे लोगों में सब से ज़ियादा अ़ज़ीज़ थी। मैं ने उस के साथ बुराई का इरादा किया लेकिन वोह मेरे क़ाबू में न आई। एक बार जब क़हत पड़ा तो वोह क़हत साली का शिकार हो कर मदद हासिल करने के लिये मेरे पास आई, मैं ने इस शर्त पर उसे 120 दीनार (यानी सोने की अशरफ़ियां) दीं कि वोह अपने आप को मेरे हवाले करेगी, चूंकि वोह बहुत मजबूर थी इस लिये मेरी इस शर्त को पूरा करने के लिये राज़ी हो गई। आख़िरेकार जब मैं अपनी ख़्वाहिश पूरी करने पर क़ादिर हो चुका था तो वोह मुझ से कहने लगी : ऐ भाई ! अल्लाह पाक से डर और इस मोहर को हक़ के बग़ैर मत तोड़। ऐ परवरदिगार ! उस के फ़रियाद करने पर मैं गुनाह से बाज़ आ गया और सोने की अशरफ़ियां भी उसी को दे दीं। अगर मेरा येह अ़मल तेरी रिज़ा और ख़ुशनूदी के लिये था तो फिर तू हम से इस आफ़त को दूर कर दे चुनान्चे चट्टान कुछ मज़ीद सरक गई मगर अब भी ग़ार से बाहर निकलना मुम्किन न था।

अब तीसरे शख़्स ने अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! तू जानता है मैं ने एक बार चन्द आदमियों को उजरत पर रखा और उन सब को उन

की मज़दूरी अदा कर दी मगर उन में से एक अपनी मज़दूरी लिये बग़ैर चला गया। मैं ने उस की मज़दूरी कारोबार में लगाई यहां तक कि उस का माल कसीर हो गया। कुछ अ़र्से बाद वोही मज़दूर मेरे पास आया और अपनी मज़दूरी का मुतालबा किया। मैं ने उस से कहा : येह जो तुम बकरियां, गायें, ऊंट और ग़ुलाम देख रहे हो येह सब तुम्हारी मज़दूरी है। वोह एक दम चौंक पड़ा और कहने लगा : ऐ अल्लाह के बन्दे ! मेरे साथ मज़ाक़ मत करो। मैं ने उस से कहा : मैं तुम्हारे साथ मज़ाक़ नहीं कर रहा, बात दर अस्ल येह है कि तुम मज़दूरी लिये बग़ैर चले गए थे तो मैं ने तुम्हारी मज़दूरी कारोबार में लगाई जिस से इतनी बरकत हुई कि येह बकरियां, ऊंट, गायें और ग़ुलाम वग़ैरा जमा हो गए और येह सब तुम्हारी मज़दूरी की पैदावार हैं। वोह मज़दूर बहुत ख़ुश हुवा और सारा माल अपने साथ ले गया, उस ने इस में से कुछ भी न छोड़ा। ऐ अल्लाह ! अगर मेरा येह अ़मल महज़ तेरी रिज़ा की ख़ातिर था तो तू हमें इस मुसीबत से नजात अ़ता फ़रमा ! चुनान्चे वोह चट्टान ग़ार के मुंह से बिल्कुल हट गई और वोह तीनों मुसाफ़िर बाहर निकल कर अपनी मन्ज़िल की जानिब रवाना हो गए। (بخاری، 2/48، حدیث:2215ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए में हमारे लिये बे शुमार मदनी फूल हैं मसलन जब कोई मुसीबत आए तो ज़ाहिरी अस्बाब इख़्तियार करने के साथ साथ दुआ़ की त़रफ़ भी मुतवज्जेह होना चाहिये लेकिन अफ़सोस ! हम इस मुआ़मले में कोताही का शिकार हैं। हमें जब कोई मुश्किल दरपेश आती है तो हम उसे दूर करने की तदबीरें करते और लोगों की ख़ूब मिन्नत समाजत करते हैं कि हमारा फ़ुलां मस्अला ह़ल कर दो मगर अल्लाह पाक की त़रफ़ रुजूअ़ नहीं करते। अगर हम में से किसी को नज़ला, खांसी या कोई परेशानी लाह़िक़ हो जाए तो वोह फ़ौरन दवाएं इस्तिमाल करने लग जाता है और परेशानी को ह़ल करने की तदबीरें करने लगता है लेकिन बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं अ़र्ज़ गुज़ार नहीं होता कि ऐ

अल्लाह ! मुझे नज़ला हो गया है, तू ठीक कर दे, ऐ अल्लाह मुझे खांसी हो गई है तू करम फ़रमा दे, ऐ अल्लाह ! आज मेरा काम में दिल नहीं लग रहा तू दिल लगा दे, ऐ परवरदिगार ! आज मुझे सुस्ती महसूस हो रही है तू चुस्ती अ़ता फ़रमा दे, ऐ अल्लाह ! मेरा ब्लड प्रेशर हाई हो गया है, तू उसे नॉर्मल फ़रमा दे वग़ैरा वग़ैरा। ज़रा सोचिये ! अगर हम दवा के साथ साथ दुआ से भी काम लें तो इस में क्या ह़रज है ? लेकिन हम दुआ की त़रफ़ उस वक़्त मुतवज्जेह होते हैं जब हमें डॉक्टर कहता है कि अब आप के मरीज़ को दुआ की ज़रूरत है यानी जब डॉक्टर दुआ की त़रफ़ राहनुमाई करता है तब हमें पता चलता है कि हमारे मरीज़ को दुआ की ज़रूरत है, इस से पहले हम दुआ से ग़ाफ़िल रहते हैं। ऐ काश ! हम पहले से ही दुआ करने वाले बन जाएं !

याद रखिये ! चाहे कैसा ही ख़त़रनाक मरज़ क्यूं न हो अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ ज़रूर करनी चाहिये। अल्लाह पाक ने हमें अपनी बारगाह में दुआ करने का हुक्म दिया है चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ24، المؤمن:60) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।

कोई मरज़ ला इ़लाज नहीं जैसा कि ह़दीसे पाक में है : अल्लाह पाक ने जितनी भी बीमारियां उतारी हैं उन की दवा भी उतारी है। (بخاری، 4/16، حدیث:5678) हां येह ज़रूर है कि बाज़ बीमारियों के इ़लाज तक डॉक्टरों की रसाई नहीं हो सकी और वोह अभी तक उन का इ़लाज तलाश नहीं कर सके।

याद रहे ! अल्लाह पाक से बढ़ कर न तो कोई काम बनाने वाला है और न आइन्दा हो सकता है लिहाज़ा जब भी कोई छोटी या बड़ी मुसीबत पेश आए अगर्चे उस मुसीबत का दूर होना ब ज़ाहिर नामुम्किन नज़र आता हो मगर हमें दुआ ज़रूर करनी चाहिये। बाज़ औक़ात ऐसी आफ़ात जिन से नजात पाना नामुम्किन लगता है, दुआ की बरकत से उन से रिहाई नसीब हो जाती है जैसा कि आप ने बयान के

शुरूअ़ में मुलाहज़ा किया कि जब तीन आदमी दौराने सफ़र रात गुज़ारने के लिये ग़ार में दाख़िल हुए तो पहाड़ से एक चट्टान फिसल कर आई जिस के बाइ़स ग़ार का मुंह बन्द हो गया और उन मुसाफ़िरों का ग़ार से निकलना तक़रीबन नामुम्किन हो गया मगर उन नेक बन्दों ने अल्लाह पाक की बारगाह में अपने नेक आमाल का वसीला पेश कर के दुआ़ मांगी तो उन का मुश्किल तरीन मस्अला ह़ल हो गया।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! पता चला दुआ़ मांगते हुए नेक आमाल का वसीला भी पेश किया जा सकता है लिहाज़ा ऐसा नेक अ़मल जो इख़्लास के साथ किया गया हो अगर्चे बज़ाहिर मामूली हो मसलन किसी ने रिज़ाए इलाही पाने की ख़ातिर नाबीना को सड़क पार करवाई हो तो वोह इस नेक अ़मल का वसीला पेश कर के भी दुआ़ मांग सकता है।

अ़मल जितना दुश्वार उतना ही वज़्नदार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो अ़मल जितना दुश्वार होगा मीज़ाने अ़मल में उतना ही वज़्नदार होगा और इस का सवाब भी उतना ही ज़ियादा मिलेगा। इसे यूं समझिये : मसलन किसी शख़्स को काम काज से बिल्कुल फ़ुर्सत थी, रोड पर ट्रैफ़िक भी ज़ियादा नहीं थी, वोह रोड पार कर रहा था कि अचानक उसे एक नाबीना दिखाई दिया चुनान्चे उस ने उस नाबीना का हाथ पकड़ा, ख़ुद भी रोड क्रोस कर लिया और उसे भी क्रोस करवा दिया, यक़ीनन उसे इस नेक अ़मल का सवाब मिलेगा लेकिन चूंकि येह अ़मल इतना दुश्वार नहीं था क्यूंकि उस के पास वक़्त भी था, रोड पर ख़ास ट्रैफ़िक भी नहीं थी और उसे ख़ुद भी रोड क्रोस करना था।

इस के बर अ़क्स कोई शख़्स रोड के किनारे अपनी दुकान में बैठा हुवा था, उस के पास गाहकों का रश था, जो माल वोह बेच रहा था उसी त़रह़ का माल दूसरी दुकानों पर भी बेचा जा रहा था लिहाज़ा गाहकों को संभालना भी ज़रूरी था क्यूंकि ज़रा सी ग़फ़्लत में गाहक एक दुकान छोड़ कर दूसरी दुकान पर चले जाते हैं

लेकिन इतने में उस दुकानदार की नज़र रोड के किनारे खड़े एक नाबीना शख़्स पर पड़ी जो रोड क्रोस करने के इन्तिज़ार में खड़ा था, गाड़ियां बड़ी तेज़ी से इस के पास से गुज़र रही थीं और कोई भी उसे रोड क्रोस करवाने वाला न था, उस दुकानदार ने न अपने गाहकों को देखा और न कारोबार का ख़याल किया बस जल्दी से अपनी दुकान छोड़ कर उस नाबीना के पास आया, उसे सलाम किया फिर उस का हाथ पकड़ कर गाड़ियों की रफ़्तार आहिस्ता होने का इन्तिज़ार किया और फिर जैसे ही उसे मौक़अ़ मिला उस ने उस नाबीना को रोड क्रोस करवा दिया फिर जब वापस अपनी दुकान पर पहुंचा तो गाहक जा चुके थे जिस के बाइ़स उसे दिली सदमा हुवा।

यक़ीनन इस सूरत में पहले वाली सूरत के मुक़ाबले में ज़ियादा सवाब मिलेगा क्यूंकि पहली सूरत में रोड क्रोस करवाने वाले को दुश्वारी का सामना नहीं करना पड़ा था जब कि दूसरी सूरत में दुकानदार को दुश्वारी उठाने के साथ साथ गाहकों के चले जाने की वजह से माली क़ुर्बानी भी देनी पड़ी। देखिये ! दोनों सूरतों में बज़ाहिर अ़मल एक ही है लेकिन दोनों के अन्दाज़, दुश्वारी और कोशिश में फ़र्क़ है।

इसी त़रह़ जब वुज़ू करना दुश्वार हो उस वक़्त वुज़ू किया जाए तो ज़ियादा सवाब मिलेगा मसलन किसी जगह सख़्त सर्दी है, मस्जिद में पानी गर्म करने के लिये गीज़र का एहतिमाम भी नहीं है और पानी भी ख़ूब ठन्डा है तो ऐसी सूरत में जिस ने मस्जिद की इन्तिज़ामिया को बुरा भला कहे बग़ैर सब्र का दामन थामते और थर थराते हुए ठन्डे पानी से वुज़ू किया उसे उस शख़्स के मुक़ाबले में ज़ियादा सवाब मिलेगा जिस ने गर्म पानी से वुज़ू किया क्यूंकि सख़्त सर्दी में ठन्डे पानी से वुज़ू करना दुश्वार अ़मल है।

यूंही जिस के लिये क़ुरआने पाक पढ़ना दुश्वार है उसे उस शख़्स के मुक़ाबले में ज़ियादा सवाब मिलेगा जिस के लिये क़ुरआने पाक पढ़ना आसान है।

मां बाप का दिल ख़ुश करना

ऐ आशिक़ाने रसूल ! आप ने बयान की इब्तिदा में जो वाक़िआ पढ़ा उस से येह भी मालूम हुवा कि मां बाप का दिल ख़ुश करना अल्लाह पाक के नज़दीक पसन्दीदा अ़मल है। देखिये ! ग़ार में दाख़िल होने वाले तीन अफ़राद में से एक मां बाप का कैसा चाहने वाला था कि अपने बाल बच्चों को उस वक़्त तक दूध नहीं पिलाता था जब तक कि अपने बूढ़े मां बाप को नहीं पिला देता, फिर जब एक रात मां बाप सो गए तो उन के सिरहाने दूध लिये खड़ा रहा, अपने बच्चों को भी नहीं पिलाया, जब मां बाप बेदार हुए तो पहले उन्हें दूध पेश किया, फिर अपने अहलो अ़याल को पिलाया।

इस के बर अ़क्स आज के इस जदीद दौर में मां बाप को कितनी अहमिय्यत दी जाती हैं बिल ख़ुसूस शादी के बाद बाल बच्चों की मौजूदगी में मां बाप की अहमिय्यत कितनी बाक़ी रह जाती है ? सभी इस से वाक़िफ़ हैं। याद रखिये ! अगर्चे मां बाप तक्लीफ़ का बाइ़स बनते हों तब भी मां बाप के हुक़ूक़ ख़त्म नहीं होते लिहाज़ा औलाद को हर सूरत सब्र से काम लेना होगा। मां के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ एक रिवायत पढ़िये :

गोश्त का टुकड़ा कबाब हो जाता

एक सहाबी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! एक राह में ऐसे गर्म पत्थर थे कि अगर उन पर गोश्त का टुकड़ा डाला जाता तो कबाब हो जाता, मैं छे मील तक अपनी मां को अपनी गर्दन पर सुवार कर के ले गया, तो क्या मैं मां के हुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया ? प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो।"

(مجمع الزوائد، 8/254، حدیث:13394)

इस रिवायत से मालूम हुवा औलाद को मां बाप के हुक़ूक़ से फ़राग़त ह़ासिल नहीं हो सकती चाहे वोह उन की कितनी ही ख़िदमत क्यूं न कर ले लिहाज़ा मां बाप के हुक़ूक़ का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है। अफ़सोस ! आज कल मुआ़शरे में मां बाप के साथ इन्तिहाई ना रवा सुलूक इख़्तियार किया जाता है और बाज़ लोग मां बाप को बिल्कुल भी लिफ़्ट नहीं करवाते।

बाज़ औक़ात औलाद को मां बाप से येह शिकायत होती है कि वोह उन के ऐसे मुआ़मलात में भी दख़्ल अन्दाज़ी करते हैं कि जिन में उन्हें मुदाख़लत नहीं करनी चाहिये तो इस ह़वाले से अ़र्ज़ है कि चूंकि वोह मां बाप हैं इस लिये हर सूरत उन का अदबो एह़तिराम ज़रूरी है। देखिये ! मां बाप ने हमारी बहुत सी ख़ताएं बरदाश्त की होती हैं मसलन हम बचपन में उन्हें सताते रहे लेकिन फिर भी वोह हमें खिलाते पिलाते रहे, हम रात को देर से घर आते तो वोह बेचारे अपनी नींद क़ुर्बान कर के हमारे इन्तिज़ार में जागते रहते, हमें बुख़ार हो जाता तो वोह सारी सारी रात हमारी ख़िदमत करते रहते लेकिन हमारी शादी करवा कर ना जाने वोह ऐसी कौन सी ग़लती कर बैठते हैं कि शादी के बाद हम उन्हें अहमिय्यत देना छोड़ देते हैं। याद रहे ! न तो बाल बच्चों की वज्ह से मां बाप पर ज़ुल्म किया जाए और न ही मां बाप की वज्ह से अपने बाल बच्चों पर ज़ुल्म किया जाए, दोनों के हुक़ूक़ का ख़याल रखना ज़रूरी है।

मक़्बूल ह़ज का सवाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मां बाप को सताने के बजाए उन का अदबो एह़तिराम कीजिये, उन से ख़ूब हमदर्दी से पेश आइये और प्यार व मह़ब्बत से उन की ज़ियारत कीजिये। मां बाप की त़रफ़ रह़मत की नज़र से देखने के भी क्या कहने ! चुनान्चे अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब औलाद अपने मां बाप की त़रफ़ रह़मत की नज़र करे

तो अल्लाह पाक उस के लिये हर नज़र के बदले ह़ज्जे मबरूर (यानी मक़्बूल ह़ज) का सवाब लिखता है। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم ने अ़र्ज़ की : अगर्चे दिन में 100 मरतबा नज़र करे ? फ़रमाया : نَعَمۡ! اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَاَطۡیَبُ यानी हां ! अल्लाह सब से बड़ा है और अ़तयब (यानी सब से ज़ियादा पाक) है। (شعب الایمان، 6/186، حدیث:7859 ملتقطاً)

कितने ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जिन के मां बाप ह़यात हैं ! ऐसों को चाहिये कि अपने मां बाप की ख़िदमत करें, उन से नर्मी से पेश आएं, बात चीत करते वक़्त आंखें न मिलाएं, उन को आता देख कर अदब में खड़े हो जाएं, उन पर ख़ार न खाएं, वोह बात चीत कर रहे हों तो उन की बात न काटें, उन्हें झाड़ने और झिड़कने से बाज़ रहें। याद रखिये ! अगर्चे वालिदैन बे नमाज़ी हों तब भी उन की ताज़ीम की जाएगी क्यूंकि नमाज़ें न पढ़ना उन का अपना अ़मल है अलबत्ता उन के गुनाहों से ज़रूर नफ़रत की जाएगी।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! चूंकि मां बाप औलाद से उ़म्र में काफ़ी बड़े होते हैं इस लिये अगर औलाद उन्हें डायरेक्ट समझाने की कोशिश करेगी तो शायद वोह समझ नहीं पाएंगे लिहाज़ा औलाद को चाहिये कि उन का अदबो एह़तिराम करती रहे, उन की इस्लाह़ के लिये उन्हें दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता करे और सुन्नतों भरे बयानात सुनने की तरग़ीब दिलाए اِنۡ شَآءَاللّٰہ उन की इस्लाह़ का सामान होगा और देखते ही देखते उन की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में जो वाक़िआ़ पढ़ा उस में बयान किया गया कि ग़ार में दाख़िल होने वाले तीन अफ़राद ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अपने नेक आमाल का वसीला पेश किया जिस की बरकत से ग़ार का मुंह खुल गया और उन्हें क़ैद से रिहाई नसीब हुई तो इस का येह मत़लब नहीं कि अल्लाह पाक की बारगाह में सिर्फ़ नेक आमाल का वसीला पेश किया जा

सकता है बल्कि याद रखिये ! नेक आमाल के साथ साथ नेक हस्तियों का वसीला भी पेश किया जा सकता है। येह कैसे हो सकता है कि हम अपनी नेकियों का वसीला तो पेश करें मगर नेक लोगों का वसीला न पेश कर सकें ह़ालांकि हमारी नेकियों के वसीले के मुक़ाबले में नेक लोगों का वसीला ज़ियादा मज़बूत है। हमारी नेकियां कहां और अल्लाह पाक के नेक बन्दों मसलन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की अ़ज़मतें कहां ? और फिर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत के तो क्या कहने ! अल्लाह पाक के बाद आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत सब से बढ़ कर है।

फ़ुक़राए मुहाजिरीन का वसीला

अल्लाह पाक की बारगाह में नेक आमाल के साथ साथ नेक अश्ख़ास का वसीला पेश करना साबित है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन ख़ालिद رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ुक़राए मुहाजिरीन के वसीले से फ़त्ह़ त़लब किया करते थे। (شرح السنۃ، 7/303، حدیث:3957)

दामन का धागा

नेक हस्तियों के साथ साथ अगर उन से निस्बत रखने वाली चीज़ों का वसीला पेश कर के भी दुआ मांगी जाए तो अल्लाह पाक क़बूल फ़रमाता है चुनान्चे "अख़्बारुल अख़्यार" शरीफ़ में है : सख़्त क़ह़त साली हुई, लोगों की बहुत दुआओं के बावुजूद बारिश न हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन अबुल मुअय्यद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी अम्मीजान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के कपड़े का एक धागा हाथ में ले कर अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! येह उस ख़ातून के दामन का धागा है जिस पर कभी किसी नामह़रम की नज़र नहीं पड़ी, मेरे मौला ! इसी के सदक़े रह़मत की बारिश बरसा दे ! अभी दुआ ख़त्म भी न हुई थी कि रह़मत के बादल छा गए और रिमझिम रिमझिम बारिश शुरूअ़ हो गई। (अख़्बारुल अख़्यार, स. 294)

पता चला कि अल्लाह पाक की बारगाह में नेक आमाल के साथ साथ ना सिर्फ़ नेक लोगों का बल्कि उन से निस्बत रखने वाली चीज़ों का वसीला भी पेश किया जा सकता है। नीज़ मालूम हुवा कि अल्लाह के नेक बन्दों से जिस चीज़ को निस्बत हो जाए वोह मुतबर्रक हो जाती है और बाज़ औक़ात इस का ज़ुहूर भी हो जाता है।

गुनाह से बचने का वसीला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ार में क़ैद होने वाले दूसरे शख़्स ने अल्लाह पाक की बारगाह में अपने एक गुनाह से बचने का वसीला पेश कर के दुआ मांगी थी और वोह गुनाह भी ऐसा था कि बदकारी पर क़ुदरत होने के बावुजूद अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से बाज़ रहना जो कि नफ़्स पर बहुत भारी है। इसे यूं समझिये कि कोई शख़्स फ़िल्म देख रहा हो और फ़िल्म भी ऐसे मोड़ पर पहुंच चुकी हो कि मज़ीद देखने का तजस्सुस बढ़ चुका हो लेकिन इतने में अचानक उस के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो जाए और उस के ज़ेहन में येह बात आए कि मैं ने दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में येह रिवायत सुनी थी कि "जो अपनी आंखों को ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में आग भर दी जाएगी।" (مکاشفۃ القلوب، ص 10) चुनान्चे वोह अल्लाह पाक से डरते हुए फ़ौरन तौबा कर ले और उसी वक़्त फ़िल्म देखना छोड़ दे तो उस का येह अ़मल भी एक नेकी है और वोह अपने इस अ़मल का वसीला पेश कर के भी अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ कर सकता है।

इसे मज़ीद इस मिसाल से भी समझा जा सकता है कि किसी शख़्स को राह चलते हुए सोने का एक लॉकेट मिला और उस ने उसे उठा लिया, अब उस की निय्यत ख़राब हुई और उस ने अपना ज़ेहन बनाया कि आज बिन मांगे दौलत हाथ आ गई है इसे बेच कर इस की रक़म अपने ज़ाती इस्तिमाल में लाऊंगा लेकिन एक

दम उसे एह़सास हुवा कि येह लॉकेट मेरे लिये ह़राम है लिहाज़ा मुझे इस के मालिक तक पहुंचाना चाहिये चुनान्चे ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से उस ने वोह सोने का लॉकेट उस के मालिक तक पहुंचा दिया तो उसे इस अ़मल का भी सवाब मिलेगा और वोह अपने इस अ़मल का वसीला पेश कर के अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ कर सकता है।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बाज़ औक़ात गुनाह पर नदामत वोह काम कर जाती है जो नेकी नहीं कर पाती इन मानों पर कि बन्दा नेकी कर के इतना सवाब नहीं पाता जितना गुनाह पर नदामत की वज्ह से पा लेता है। इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये :

दो जन्नतें अ़ता कर दी गईं

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं कि मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में एक नेक नौजवान हुवा करता था जो ज़ियादा तर वक़्त मस्जिद में गुज़ारता था, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه उस की नेकी की वज्ह से उसे बहुत पसन्द करते थे, उस नौजवान का बाप बूढ़ा था, नमाज़े इशा पढ़ कर वोह अपने बाप की ख़िदमत के लिये घर चला जाता था। मस्जिद और उस के घर के दरमियान एक औ़रत रहती थी जो उस नौजवान पर फ़रेफ़्ता हो गई, वोह रोज़ाना उसे अपने पास बुलाती मगर वोह उस की त़रफ़ मुतवज्जेह न होता। आख़िरेकार ! एक दिन शैत़ान ने उस नौजवान पर ग़लबा पा लिया और उसे गुनाह पर आमादा कर लिया, जब वोह नौजवान उस औ़रत की दावत पर गुनाह के इरादे से उस की जानिब बढ़ा और उस के घर के दरवाज़े पर पहुंचा तो अचानक उस पर ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब आया और उस की ज़बान पर बेसाख़्ता येह आयते मुबारका जारी हो गई :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىِٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ (پ9، الاعراف:201)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

वोह नौजवान ग़श खा कर गिर पड़ा, उस औरत ने अपनी बांदी को बुलाया और दोनों ने मिल कर नौजवान को घसीटा और उस के बाप के दरवाज़े पर ले जा कर डाल दिया। इधर बाप ने ख़याल किया कि अब तक बेटा घर क्यूं न आया ? जब वोह तलाश के लिये निकला तो उस ने अपने बेटे को बेहोश पाया, उस ने कुछ लोगों की मदद से बेटे को उठाया और घर ले आया, जब बेटे को होश आया तो बाप ने पूछा : बेटा क्या बात है ? बेटे ने सारा वाक़िआ कह सुनाया। बाप ने बेटे से पूछा : तुम्हें कौन सी आयत याद आई थी ? जब उस ने दोबारा वोही आयत अपने वालिद साहिब को सुनाई तो फिर से उस पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा हुवा और वोह बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा, उसे येह नदामत लाहिक़ हुई कि उस ने ऐसे गन्दे काम की तरफ़ क़दम क्यूं उठाया ? जब उसे हिला कर देखा गया तो ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से उस की जान निकल चुकी थी और वोह दम तोड़ चुका था, उसे ग़ुस्ल दे कर रातों रात ही कफ़न व दफ़न का एहतिमाम कर दिया गया। सुब्ह जब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ख़बर पहुंची तो आप उस के वालिद के पास ताज़ियत के लिये तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : हमें रात को ही इत्तिलाअ़ क्यूं न दी ? अ़र्ज़ की : रात के वक़्त आप को तक्लीफ़ देना मुनासिब नहीं समझा। फ़रमाया : मुझे उस की क़ब्र पर ले चलो, चुनान्चे सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ चन्द अफ़राद के साथ उस की क़ब्र पर पहुंचे और सूरए रह़मान की इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई : ﴿وَ لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾﴾ (پ27، الرحمٰن:46)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

उस नौजवान ने क़ब्र के अन्दर से कहा : ऐ उ़मर ! बेशक मेरे रब ने मुझे वोह दो जन्नतें अ़ता फ़रमा दी हैं। (शर्हुस्सुदूर, स. 213 माख़ूज़न)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! उस नौजवान को गुनाह से बचने पर कितना बड़ा इन्आ़म मिला कि अल्लाह पाक ने उसे दो जन्नतें अ़ता फ़रमाईं।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में जो वाक़िआ़ सुना उस में ग़ार में फंस जाने वाले तीसरे शख़्स का येह नेक अ़मल बयान किया गया कि उस ने अपने माल से मज़दूर की उजरत अलग कर के उसे कारोबार में लगाया और फिर मज़दूर की त़रफ़ से मज़दूरी त़लब किये जाने पर मज़दूरी के साथ साथ इस से ह़ासिल होने वाला सारा नफ़ा मज़दूर के सिपुर्द कर दिया ह़ालांकि ऐसा करना उस पर शरई त़ौर पर वाजिब न था।

देखिये ! उस मज़दूर की मज़दूरी से ह़ासिल होने वाला नफ़ा कम नहीं था बल्कि अगर आज के दौर के ह़िसाब से उस की मालियत का अन्दाज़ा लगाया जाए तो शायद लाखों करोड़ों रुपिये बन जाएं मगर उस ने सारा माल मज़दूर को दे कर उसे ह़ैरत में डाल दिया। मौजूदा ज़माने में दियानत दारी की ऐसी मिसाल मिलना बहुत मुश्किल है। आज अगर कोई मज़दूर अपनी उजरत लिये बग़ैर चला जाए तो हमारा नफ़्स हमें येही मश्वरा देगा कि देखो ! वोह अपनी मज़दूरी अपनी मर्ज़ी से छोड़ कर गया है इस में तुम्हारा क्या क़ुसूर है ? फिर हम ज़ियादा से ज़ियादा उस पर येह एह़सान करेंगे कि जितनी उस की मज़दूरी बनती होगी त़लब करने पर उतनी उसे दे देंगे। अगर्चे येह भी काफ़ी है लेकिन ग़ार में क़ैद उस शख़्स की सख़ावत और जज़्बए ईसार के क्या कहने ! पहले उस ने मज़दूर की रक़म को कारोबार में लगा कर उसे बढ़ाया और फिर सारे माल को उस के ह़वाले कर दिया।

आह ! माल का मुआमला बहुत दुश्वार है। आज कल सर्मायादार लोग ज़कात देने के मुआमले में ख़ूब टाल मटोल से काम लेते हैं। बाज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि ज़कात का हक़दार सर्मायादारों की ख़ूब मिन्नतें और ख़ुशामदें करता है लेकिन वोह उस बेचारे को बार बार बुला कर धक्के खिलाते और फिर इतना थोड़ा माल देते हैं कि उस का गुज़ारा नहीं हो पाता।

बहर हाल ग़ार में क़ैद तीसरे शख़्स का मज़दूर को नफ़ा समेत उस की मज़दूरी देने वाला अमल इतना अज़ीम और ज़बरदस्त था कि जब उस ने अपने उस नेक अमल का वसीला पेश कर के अल्लाह पाक से दुआ मांगी तो उस की बरकत से चट्टान ग़ार के मुंह से बिल्कुल हट गई और वोह तीनों मुसाफ़िर आसानी के साथ ग़ार से बाहर निकल आए।

मुहाले आदी (यानी नामुम्किन) की दुआ नहीं करनी चाहिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी कोई परेशानी आए चाहे छोटी हो या बड़ी, उस के हल के लिये तदबीर करना मुम्किन हो या नामुम्किन, अल्लाह पाक की बारगाह में उस के हल होने की दुआ ज़रूर करनी चाहिये। हां ! जो चीज़ें मुहाले आदी हैं उन की दुआ नहीं कर सकते मसलन दस्ते ग़ैब की दुआ नहीं कर सकते क्यूंकि येह मुहाले आदी है और मुहाले आदी की दुआ करना नाजाइज़ व हराम है। दस्ते ग़ैब (यानी बग़ैर किसी ज़ाहिरी ज़रीए के हासिल होने वाली रक़म) के लिये दुआ करना जैसा कि ऐ अल्लाह ! जब मैं मुसल्ले के नीचे हाथ डालूं तो नोटों से मेरी मुट्ठी भर जाए वग़ैरा वग़ैरा। अलबत्ता यूं दुआ की जा सकती है कि ऐ अल्लाह ! मेरी रोज़ी में बरकत दे या मुझे रोज़ी के ज़राए अता फ़रमा।

याद रखिये ! जो चीज़ें मुहाले आदी नहीं उन की दुआ मांग सकते हैं। मसलन ऐ अल्लाह ! मेरी तंगदस्ती दूर हो जाए, मुझे अच्छी और आसान नौकरी

मिल जाए, मेरी तनख़्वाह अच्छी हो जाए, मेरा अपना कारोबार हो जाए, मुझे अपना ज़ाती मकान मिल जाए, मेरे अमराज़ दूर हो जाएं, मेरे बच्चे का मरज़ दूर हो जाए वग़ैरा वग़ैरा। बद क़िस्मती से हमारा दुआ की त़रफ़ रुजह़ान कम जब कि तदबीर की त़रफ़ ज़ियादा होता है। हम ज़ाहिरी अस्बाब की त़रफ़ बहुत ज़ियादा भागते हैं ह़ालांकि अगर हमारी नज़र ख़ालिक़े अस्बाब पर हो जाए तो अस्बाब दौड़ते हुए हमारे पास पहुंच जाएंगे।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! किसी मुश्किल के ह़ल के लिये अल्लाह पाक के नेक बन्दों से फ़रियाद करने में भी कोई मुज़ायक़ा नहीं और प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो नेक बन्दों के सरदार हैं लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रियाद करने में भी कोई ह़रज नहीं। अल्लाह पाक ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत सी त़ाक़तें अ़त़ा फ़रमाई हैं और वोह हमारी फ़रियाद रसी कर सकते हैं। देखिये ! जब हम डॉक्टर साह़िब से गुज़ारिश करते हैं कि डॉक्टर साह़िब ! हमारे बच्चे को ठीक कर दीजिये तो अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो कि त़बीबों के त़बीब हैं अगर इन की बारगाह में कोई उम्मती तड़प कर फ़रियाद करे कि "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मेरे बच्चे पर नज़रे करम फ़रमा कर उसे ठीक कर दीजिये" तो इस में क्या ह़रज है ? इसी त़रह़ "जब हमारी कोई चीज़ चोरी होती है तो हम ब ज़रीअ़ए साइन्सी कनेक्शन यानी फ़ोन कर के मददगार पोलीस से राबित़ा करते हैं" तो "अगर हम ब ज़रीअ़ए रूह़ानी कनेक्शन बेकसों के मददगार, मह़बूबे परवरदिगार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रियाद करें" तो इस में क्या ह़रज है ?

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह ! करे दिल से

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन सीखने सिखाने और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मामूल बना लीजिये। हर इस्लामी भाई ज़िन्दगी में एक साथ 12 माह, हर 12 माह में एक माह और हर महीने में कम अज़ कम 3 दिन के क़ाफ़िले में सफ़र करे। नीज़ मुम्किन हो तो क़ाफ़िला कोर्स कर लीजिये ताकि क़ाफ़िलों को तय्यार करने में ज़ियादा मुश्किल पेश न आए और इन सब दीनी कामों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये "नेक आमाल" पर अ़मल कीजिये, रोज़ाना नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जमा करवाने का मामूल बना लीजिये।

फ़ेहरिस्त

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत.....	01
अ़मल जितना दुश्वार उतना ही वज़्नदार.....	05
मां बाप का दिल ख़ुश करना.....	07
मक़्बूल ह़ज का सवाब.....	08
फ़ुक़राए मुहाजिरीन का वसीला.....	10
गुनाह से बचने का वसीला.....	11
दो जन्नतें अ़ता कर दी गईं.....	12
मुहाले आ़दी की दुआ़ नहीं करनी चाहिये.....	15

अगले हफ़्ते का रिसाला

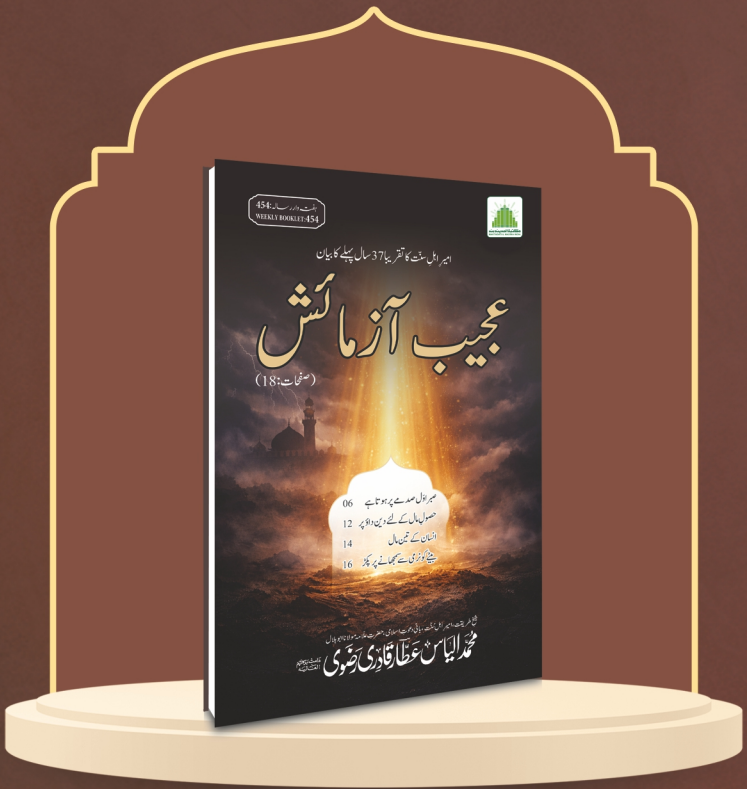

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025